पाठ – 5

मीराँबाई

कवयित्री परिचय

जन्म– 1498 ई.

मृत्यु– 1564 ई.

मरू–मन्दाकिनी मीराँबाई भक्तिकालीन कृष्ण भक्ति शाखा की सहज, सरस, विरह–वेदना की अमर गायिका एवं साधिका हैं। मीराँ का जन्म मेड़ता के कुड़की नामक ग्राम में हुआ था। मीराँ का विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के कुँवर भोजराज के साथ हुआ, जिनका अल्पायु में ही देहान्त हो गया। वैधव्य काल में मीराँ ने अपना सम्पूर्ण जीवन कृष्णार्पित कर दिया।

उनका अधिकांश समय सत्संग और भजन में व्यतीत होना राज–कुल मर्यादाओं के प्रतिकूल अनुभव कर मेवाड़ के राणा विक्रमादित्य द्वारा मीराँ की जीवन लीला समाप्त करने के प्रयास के अन्तःसाक्ष्य मिलते हैं। भौतिक जीवन से विरक्त हो मीराँबाई राजघर छोड़कर वृन्दावन चली गयीं। वहाँ से द्वारका जाकर अन्ततः वहीं कृष्ण भक्ति में तल्लीन रहीं। मीराँ बाई की भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है। इनका काव्य जीवन की सहज अभिव्यक्ति है। वे श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत हो अपनी अभिव्यंजना श्री कृष्ण को समर्पित करती हैं। उनके पदों में प्रेम की पीर, आत्म निवेदन, आत्म समर्पण और विरह वेदना की तीव्रतम अनुभूति की गहराई सर्वत्र दृष्टिगत होती है। उनकी भाषा का मूल रूप राजस्थानी है। उसमें ब्रज, गुजराती, अवधी तथा खड़ी बोली की शब्दावली का रसमय सम्मिश्रण है।

कृतियाँ

नरसी जी रो मायरो, गीत गोविन्द की टीका, रासगोविन्द, मीराँबाई का मलार, राग विहाग,

पाठ परिचय

अपने अराध्य के प्रति सर्वस्व समर्पण का स्वर मीराँ के पदों से अभिव्यक्त होता है। संकलित काव्यांश में मीराँ के श्री कृष्ण के प्रति भक्तिभाव का चित्रण तो मिलता ही है, उसके साथ ही अपनी सांसारिक यात्रा में मीराँ को जो अनुभव हुआ है, उसका आभास भी होता है। मीराँ बाई ने भक्ति रूपी पूँजी की महत्ता बताते हुए उसे अक्षय सम्पत्ति कहा है, जिसे न चोरी किया जाए, नहीं खर्च करने पर कम होने की चिन्ता रहती है।

कृष्ण के मुरलीधर रूप को ही अपना अराध्य मान, वही छवि अपने मानस में स्थिर करना चाहती है। मीराँ ने माधुर्य भाव प्रधान भक्ति भाव से सरल, सुबोध भाषा में विभिन्न पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से आत्म निवेदन किया है। संकलित पाठ्यांश मीराँ की भक्ति के प्रमुख आधार को सजीव करता है।

मीराँ

पायो जी मैंने राम रतन धन पायौ ।
बसत, अमोलक दी मेरे सतगुरू, करि किरपा अपनायौ
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सबै खोवायौ ।।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवैं, दिन–दिन बढ़त सवायौ ।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरू, भवसागर तरि आयौ ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, हरषि हरषि जस गायो ।

बसो मोरे नैनन में नंदलाल ।
मोहनि मूरति, सांवरि सूरति नैना बने बिसाल ।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरूण तिलक सोहे भाल ।
अधर सुधा रस मुरली राजति उर वैजन्ती माल ।
छुद्र–घंटिका कटि–तट सोभित, नूपुर सबद रसाल ।
मीराँ प्रभु संतन सुखदायी, भगत बछल गोपाल।।

करम गति टारे नाहिं टरै ।
सत–वादी हरिचंद से राजा, नीच घर नीर भरै ।
पाँच पाडुं अर सती द्रोपदी, हाड़ हिमालै गरै ।
जग्य कियौ वलि लेण इन्द्रासण, सो पाताल धरै ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, विख से अमृत करै ।

शब्दार्थ–

अमोलक–अमूल्य,	सवायेा–अधिक,
रसाल–मीठा स्वादिष्ट,	नैना – नेत्र ।
खेवटिया–नाव चलाने वाला,	करम गति–भाग्य की गति,
भव सागर–संसार सागर,	हाड़–शरीर,
अधर–होंठ,	विष–जहर,
सुधा–अमृत,	मोहनि–सुन्दर,

वैजन्ती माल–पाँच रंगों के फूलों वाली लम्बी माला,

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मीराँ ने भव सागर पार करने के लिए किसे अपना खेवट माना है?

क) सतगुरु को　　ख) श्री कृष्ण को

ग) श्री राम को　　घ) स्वयं को

2. मीराँ अपने नेत्रों में किसे बसाना चाहती है?

क) वसुदेव को　　ख) श्री कृष्ण को

ग) नन्द लाल को　　घ) योगेश्वर को

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. इन्द्रासन प्राप्त करने के लिए किसने यज्ञ किया था?

4. मीराँ ने 'अमोलक' वस्तु किसे कहा है?

5. मीराँ को जहर देकर किसने मारने का प्रयास किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. मीराँ ने 'रामरतन धन' की क्या–क्या विशेषताएँ बतायी हैं?

7. मीराँ कृष्ण के किस रूप को अपनी आँखों में बसाना चाहती है?

8. 'करम गति टारै नाहिं टरै' पद की अन्तर्कथाएं स्पष्ट कीजिए।

9. 'खरचै नहिं कोई चोर न लेवैं' पंक्ति को स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

10. निम्न की व्याख्या कीजिए–

क) पायो जी मैंने ..... जस गायो।

ख) मोहनि मूरति ..... बछल गोपाल।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. (क)
2. (ग)